

कहानी



दीपमाला गिडवानी

नव्या आज बहुत उत्साहित थी, उसके महाविद्यालय में वार्षिक उत्सव का आयोजन होने वाला था. उसने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु अपना नाम लिखवाया, पर सबसे ज्यादा वह गीत और नृत्य प्रतियोगिता के लिए उत्साहित थी, उसने दोनों प्रतियोगिताओं की बहुत अच्छी तैयारी की थी. आखिर वह समय भी आया जब वह नृत्य प्रतियोगिता के लिए तैयार होकर स्टेज पर आई. उसने बहुत ही सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया पर अंतिम ताल पर उसका पैर फिसला और उसी क्षण किसी ने उसे गिरने से बचा लिया. कौन था वह, जिसने उसे त्वरित गति से थाम लिया था? जब उसने युवक का चेहरा देखा, तो वह उसे देखती ही रह गई. उसके पैरों में मोच भी आई थी. उस युवक ने उसे सहारा देकर घर तक पहुँचाया. नव्या उस युवक के चरित्र से काफी प्रभावित हुई. बार-बार उसका चेहरा उसे याद आने लगा. कुछ महीनों बाद जब नव्या के विवाह की बात के चलते उसके माता-पिता ने उसे कुछ लड़कों के फोटो दिखाए, तो उसने किसी के लिए भी हँस नहीं कहा. उसके मानसपटल पर केवल वही चेहरा अंकित था. एक दिन एक महिला नव्या के लिए सौरभ का रिश्ता लेकर आई. सौरभ शहर के प्रतिष्ठित और संपन्न परिवार का युवक था. नव्या ने फोटो देखने से पहले ही मना कर दिया पर उसके माता-पिता ने लड़के और उसके परिवार वालों को घर पर बुला लिया. नव्या किसी भी लड़के से मिलना नहीं चाहती थी, किन्तु अपने माता-पिता के कहने पर जैसे-तैसे तैयार होकर ड्राइंग रूम में आई और उस युवक को देखकर हक्की-बक्की रह गई. यह वही शख्स था जिसने मंच पर फिसलते वक़्त उसका हाथ थामा था. उसके चेहरे पर विस्मय की रेखाएँ देखकर सौरभ और नव्या के परिवारवालों को लगा कि शायद उसे सौरभ पसंद नहीं आया. वह चाय टेबल पर रखकर चुपचाप नज़रें झुकाकर बैठ गई. नव्या और सौरभ को एक-दूसरे से बातचीत करने का अवसर दिया गया. नव्या ने अपने उत्साह को छिपाते हुए, बहुत ही साधारण तरीके से बात की परंतु सौरभ ने अपने हृदयगत भावों को मुखरित कर दिया था. दोनों ने विवाह हेतु अपनी सहमति दी. लिहाजा दोनों पक्ष विवाह हेतु तैयार हो गए. कुछ दिनों में विवाह की तिथि निश्चित कर दी गई. फिर क्या था! नव्या का मन एक अलग ही दुनिया में भ्रमण करने

परिणीति

लगा. उसकी कल्पनाओं को पंख लग गए और वह एक खूबसूरत-सी दुनिया में विचरण करने लगी. पिता ने धूमधाम से उसका विवाह कर उसे विदा किया और विदाई के समय उससे कहा, 'पुत्री! ससुराल में कोई भी बात हो जाए परंतु कभी अपना धीरज मत खोना. 'यह सुन उसकी आँखों से अश्रु छलक आए और थोड़ी ही देर में सभी परिजन भी भावुक हो गए, करुणामय विदाई हुई. पिता के वचनों को आत्मसात कर नव्या ने अपने नए जीवन में प्रवेश किया. वह बहुत प्रसन्न थी. सौरभ बहुत अच्छा लड़का था, वह उसे खुश रखने का प्रयत्न करता था. सौरभ का परिवार भी छोटा था. वह अपने माता-पिता तथा बहन खुशबू के साथ रहता था. उसका घर आधुनिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण था. उसके पिता का इलेक्ट्रॉनिक सामान का व्यवसाय था. आमदनी काफी अच्छी थी. नव्या बहुत सुंदर और संस्कारी लड़की थी. वह सुबह जल्दी उठकर नाना-धोकर घर के कार्यों में जुट जाती थी. अपनी माँ की कही हुई हर बात का पालन करती हुई सभी को समय पर चाय, नारता और खाना देने के बाद ही भोजन करती थी. घर की सारी जिम्मेदारी उसने जल्द ही संभाल ली थी. उसकी वाणी की मधुरता ने सबका मन मोह लिया था. उसके ससुर और पति दोनों ही उसकी बहुत प्रशंसा करते थे. धीरे-धीरे मोहल्ले वाले और रिश्तेदार भी उसके गुणों की सराहना करने लगे. उसकी इतनी प्रशंसा सुनकर एकाएक उसकी सास और ननद खुशबू उससे ईर्ष्या करने लगी थी. जब भी कोई नव्या की तारीफ करता, खुशबू उसकी निंदा करने लगती. बिना बात के ही झगड़ा करती. वह जब भी घर का कोई काम करती, वे दोनों उसके काम में व्यथान करतन करती. पड़ोसियों और रिश्तेदारों से भी नव्या की निंदा करती लगी. उसकी गलती न होने पर भी आप दिन घर में ननद और सास की वजह से कोहराम मचने लगा था. अब तो उसके ससुर भी अपनी पत्नी और पुत्री के सुर में सुर

मिलाने लगे और पुत्र को दुकान पर धमकाने भी लगे कि, 'देखो सौरभ! यदि नव्या के कहने पर घर छोड़कर गए तो अच्छा नहीं होगा. मैं तुम्हें समाज में बदनमा कर दूँगा और तुम पर यह आरोप लगेगा कि बेटे ने पत्नी के कारण माता-पिता को छोड़ दिया.' पानी सिर के ऊपर आ गया था. रोज-रोज की नोक-झोंक से सौरभ तंग आ गया था. उसे अपनी पत्नी पर विश्वास था, पर वह उसके लिए कुछ नहीं कर पा रहा था. वह जब भी नव्या का साथ देता या उसके पक्ष में कोई बात कहता तब घर वाले नव्या को और अधिक परेशान करते और साथ ही सौरभ को भी ताने सुनाते. सौरभ बहुत अनमना रहने लगा था. वह ज्यादा किसी से बात नहीं करता. कुछ दिन वह अंतर्द्वंद्व में रहा. एक दिन सौरभ ने मन ही मन एक निर्णय लिया और नव्या से कहा, 'आज के बाद तुम्हें घरे घरवालों की वजह से परेशान नहीं होना पड़ेगा. मैं जल्द ही तुम्हें इन तकलीफों से मुक्त कर दूँगा.' नव्या को सौरभ की कही अंतिम पवित्र एक गुथी की तरह लगी, जिसे वह सुलझा नहीं पा रही थी. उसने सोचा, शायद सौरभ ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसने घरवालों से अलग रहना तय किया है. सौरभ ने क्या निर्णय लिया था! नव्या जानना चाहती थी परंतु सौरभ ने इसकी भनक तक किसी को नहीं लगाने दी. अगले दिन सौरभ सुबह शौ-रूम पर जाने के लिए घर से निकला, परंतु वहाँ न जाकर रेलवे स्टेशन चला गया. रेलगाड़ी आने ही वाली थी और वह पटरियों पर चला गया. वह अपने परिवार वालों को बहुत चाहता था पर उनके व्यवहार में नव्या के प्रति द्वेष और कटुता देखकर उसका मन भीतर से रिसने लगा था. एक टीस भीतर-ही-भीतर उथल-पुथल मचा रही थी जिसकी परिणति आत्महत्या के रूप में हुई लेकिन हत्या आत्महत्या के बीच का द्वंद्व कुछ क्षण



पटरियों पर बिखरा रहा. घर में अनबन के कारण अनहोनी घटित हो गई जिसके बारे में घर वालों ने कभी सोचा नहीं था. सौरभ के माता-पिता को लगा था कि नव्या को परेशान करेंगे तो सौरभ उसे छोड़ देगा परंतु विधाता ने अलग ही खेल रचा था. उसकी मृत्यु की खबर जब घरवालों तक पहुँची तो सभी ने नव्या पर आरोप लगाने शुरू किए, नव्या का रो-रोकर बुरा हाल था. सौरभ के माता-पिता अफसोस व्यक्त करने की बजाय अपनी बहू पर दोषारोपण कर रहे थे ताकि उनके दोष उजागर ना हो पाएँ. वे नव्या का मूँह बंद करना चाहते थे जिससे वह पुलिस के सामने कुछ ना कहे. सौरभ के माता-पिता पुलिस के सामने गिड़गिड़ाने लगे और कहने लगे कि वे नव्या को गिरफ्तार कर लें क्योंकि उसी की वजह से सौरभ ने इतना बड़ा फैसला किया. पुलिस द्वारा पूछताछ करने पर नव्या रोते-रोते बेसुध हो गई. पुलिस ने सौरभ के माता-पिता, बहन एवं पड़ोसियों से पूछताछ की और उनके बयान लिखे, जब नव्या होंश में आई तो वह फिर बहुत रोने लगी. अगली रात वह फिर थाने जाकर अपना बयान देकर आई जिसमें उसने सौरभ के माता-पिता की सारी करतूत बयान की. उन दोनों को हिरासत में ले लिया गया और उन पर न्यायालय में मुकदमा चला. काफी समय तक कार्यवाही चलती रही. इस घटना के कुछ दिनों बाद नव्या अपने पीरार आ गई. कुछ महीनों तक गुमसुम रही, कहीं आती-जाती नहीं थी. उसके माता-पिता चिंतित रहने लगे थे. एक दिन उन्होंने नव्या से कहा - 'नव्या गुम अपनी आगे की पढ़ाई पूरी कर लो.' उसने सौरभ की यादों को संजोए अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखी. स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद फिर से नव्या के विवाह के प्रस्ताव आने लगे. अब वह विवाह नहीं करना चाहती थी. कभी-कभी सौरभ की यादों में बहुत ज्यादा खोई हुई व्यथित लगती. माता-पिता के बहुत समझाने-मनाने के बाद उसने विवाह के लिए स्वीकृति दी, पर इस विवाह के समय उसके चेहरे पर वह मुस्कान नहीं थी जो पहले विवाह के समय थी. उसका विवाह झीलों की नगरी में हुआ. वहाँ के अद्भुत सौंदर्य ने उसे अभिभूत कर दिया. नव्या का दूसरा पति आदित्य भी सरल स्वभाव का था और उसके ससुराल वाले भी सभ्य और अच्छे विचारों के थे. वह धीरे-धीरे अपने दुखों, तकलीफों से उबरने लगी थी पर सौरभ की यादें उसे बरबस रुला देती थीं. दूसरी ओर उसे जीवन पुकार रहा था, जिंदगी जीने के लिए. वह एक प्रतिष्ठित विद्यालय में अध्यापिका के रूप में अपनी सेवाएँ देने लगी. विद्यार्थियों को पढ़ाना और विद्यालय के अकादमिक कार्यों में सहयोग करना, यह सब उसे अच्छा लगाने लगा था. एक दिन नव्या और आदित्य प्रोफेसरगार झील के किनारे घूम रहे थे. वहाँ से प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य को निहारते हुए नव्या बहुत प्रसन्न लगी रही थी. पल-पल परिवर्तित प्रकृति-रूपसौ ने उसका मन मोह लिया. खुशी और गम दोनों भाव उसकी आँखों में तैर रहे थे और कुछ ही क्षणों में उसकी आँखें नम हो गईं.

क्लास by बड़े भाई

यह सब मत याद रखिये



संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/रिकल ट्रेनर

छोटे भाई, किसी को कहते सुना है? मुझे एक एक बात याद रहती है. भाई, किसने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है एक एक चेहरा याद है... सुना है न? सुना ही होगा. छोटे भाई, ऐसे लोगों को आप कभी खुश नहीं देख सकते... वो पूरा जीवन बदला लेने के फिरोक में ही बिता देते हैं। अब आप कहेंगे कि तो क्या भूलकड़ हो जाना चाहिए... नहीं भूलकड़ हीने को नहीं कहा बल्कि किस बात को किनारे कर देना चाहिए, जाने देना चाहिए, यह समझने कि बात है. छोटे भाई, यह दुनिया हजार कहानियों से भरी है। कहीं अस्वास्थ्य हैं तो कहीं कुछ बुराईयों भी है। इस दुनिया में आपको सबकुछ अच्छा मिले, सबकुछ आपके हिसाब से रहे यह थोड़ा मुश्किल है। असंभव कह सकते हैं। अचा बताइए, आपको टंड पसंद है तो क्या अधिक टंड आपको चुभती नहीं है। बारिश आपको पसंद है लेकिन जब बारिश लगातार होती ही रहे तब? शायद नहीं... लेकिन आप बर्दशत करते हैं न... क्या शिकायती होकर आप उन्ही हवाएँ रोक लेंगे? क्या बारिश की बूँदें आपकी शिकायत सुन सकेंगी? नहीं तो फिर शिकायती क्यों होना... इस तरह छोटे भाई जिंदगी में कहीं अच्छा तो कहीं बुरा मिलता ही रहेगा। अगर याद रखना है तो सुन्दर और ऊँचे लक्ष्य की ओर ले जाने वाली बातें याद रखें... किसी से बदला लेंगे, देख लेंगे... इन सबसे अपने आपको दूर रखिये. छोटी सी जिंदगी को छोटी छोटी बातें नजरअंदाज करके, इसे बढ़िया शानदार बनाए रखिये। कभी अपमान किया किसी ने, किसी ने आपकी कीमत नहीं समझी, परिवार ने आपके समर्पण को नहीं देखा, किसी ने आपके प्रेम को नहीं समझा... और जाने दीजिए. इनको बड़ा बनाएंगे तो यह आपके पक्ष में तो हो नहीं जायेंगे बल्कि आपके पूरे जीवन पर बुरी प्रथा फिर बरह छायी रहेगी और आप एक शानदार जीवन इनके भीतर व्यर्थ करेंगे. छोटे भाई इसके लिए करना कुछ नहीं है... बस आपका एक बढ़िया सा लक्ष्य हो... बस उसके लक्ष्य को हासिल करने के लिए लड़ें... बाकि सब भूल जाइए... क्योंकि ऐसे चेहरे याद रखने लगेंगे और सबसे बदला लेने कि रणनीति बनाने लगेंगे तो इस फेर में लक्ष्य से भटकेंगे या देरी से पहुँचेंगे और कुछ नहीं होगा. धन्यवाद

आयोजन



शिल्पी जैन

होकर जो लिखा जाता है वही याद रह जाता है. कविता में शब्द अपनी बैठक खुद तय करते हैं. कविता का काम पाठक को सोचने पर मजबूर करना है. एक कवि के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि वह अपनी कविताओं का निर्माण आलोचक बनें. कविता विधा पर ये महत्वपूर्ण बातें म.प्र.हिंदी साहित्य सम्मेलन को देवास इकाई और लिटरेचर क्लब की दो दिवसीय कार्यशाला 'सुनो, क्या कहती कविता' में उभरकर सामने आई. शुरुआत में कथाकार मनीष वैद्य ने इसकी रूपरेखा पर विस्तार से प्रकाश डाला. पहले सत्र 'बीज से बिंब तक' में प्रतिष्ठित कवि संजीव कौशल (नई दिल्ली) ने बेहद आसान तरीके से बहुत

कविता में हमारे आमफहम जीवन और उसके आस-पास के परिवेश से प्रभावित होकर जो लिखा जाता है वही याद रह जाता है. कविता में शब्द अपनी बैठक खुद तय करते हैं. कविता का काम पाठक को सोचने पर मजबूर करना है. एक कवि के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि वह अपनी कविताओं का निर्माण आलोचक बनें.

सादगी के साथ कविता की बारीकियों को समझाया. उन्होंने कहा कि हमारी भाषा इतनी सरल हो कि किशोर उम्र के बच्चे भी उसे समझ सकें, कविता सदैव से प्रेम, प्रकृति और प्रतिरोध के मायनों में लिखी जाती रही है पर कवि का कहन उसे पृथक और विशिष्ट बनाता है. कविता लिखने के लिए हमें गलत के प्रति सजग होना जरूरी है, कविता अपनी तासीर में गलत के खिलाफ खड़ी होती है. जब हमारे संघर्ष, पीड़ा, हमारा द्वन्द्व हमारा होकर भी सब का हो जाए, आम पाठक के मन की परतों के भीतर तक जाकर उसे जगा सके तब होती है बड़े फलक की कविता. इस सत्र का मॉडरेशन युवा कवि अमेय कान्त ने उम्दा तरीके से किया. दूसरे सत्र 'कवितापन की तलाश' में वरिष्ठ कवि राजेश सक्सेना (उज्जैन) ने बताया कवितापन के लिए तीन चीजें जरूरी हैं प्रेम, प्रकृति और प्रतिरोध. बांग्ला की चर्चित युवा कवि झिलम त्रिबेदी (कोलकाता) ने बताया कि कविता परत-दर-परत खुलती है जरूरी नहीं पहली पंक्ति ही आपको संप्राइज करे. कविता की लय,छंद और आंतरिक लय पर भी गंभीरता से बात हुई. इस सत्र का मॉडरेशन यशोधरा भटनागर ने किया.



तीसरे सत्र में प्रतिभागियों ने कविता पाठ किया जिसका संचालन तनिष्का ने किया. पहली बार बांग्ला में झिलम से कविताएँ सुनीं जो एक यादगार अनुभव बन गया. इनका हिन्दी में अनुवाद राजेश विश्वाजी ने किया. अलग-अलग तेवर और भाव भूमि की सुगढ़ कविताएँ सुनना और उस सुनने से कविता को समझने पर जोर दिया गया. अतिथि वक्ताओं ने भी बेहतरीन कविताएँ पढ़ीं. अगले दिन के पहले सत्र 'कविता; लोकल से ग्लोबल तक' में बातचीत हुई कि कैसे कविता बड़े फलक की होती है इसे निरंजन श्रोत्रिय (भोपाल) ने आसान भाषा में समझाया. इस सत्र का मॉडरेशन मनीष शर्मा जी ने किया. पाँचवें सत्र 'कविता की ज़बान' में प्रतापराव कदम (खंडवा) ने कविता की भाषा, शिल्प, शब्दों के चयन और संवेदना पर खुलकर बातचीत की. इस सत्र का मॉडरेशन रश्मि शर्मा ने किया. सभी सत्रों में प्रतिभागियों के सवाल

के जवाब अतिथि वक्ताओं ने दिए जिससे कविता की समझ को और विस्तार मिला. प्रतिभागियों ने जाना कि व्यक्तिगत प्रतिरोध, पीड़ा और द्वन्द्व जब साड़ी पीड़ा, द्वन्द्व बन जाते हैं तो वे कविता हो जाते हैं और प्रभावी बिंब इन्हें बड़े फलक की कविता बनाते हैं. शाम के मुख्य समापन आयोजन में कविता की स्थानिकता, नए कवि के सामने आने वाली चुनौतियों से कैसे उबर जाए इस पर अच्छी बात हुई. अध्यक्षता डॉ कोमल जैन ने की. स्वागत भाषण कुपाली राणा ने, इकाई परिचय शर्मिला ठाकुर और अतिथि परिचय शिरोन भावसार ने दिया. इस सत्र को सुनने के लिए सौ से अधिक सुधी श्रोताओं से हॉल खचाखच भरा रहा. इस अवसर पर सुमन कुमावत के ताजा कविता संग्रह 'मेरी हँसी की भाषा' तथा कुसुम वाग्दे के कविता संग्रह 'आवाज़ें झूकर पर नहीं होती' का विमोचन हुआ. इनपर आमंत्रित अतिथियों ने खुलकर बातचीत की. इस सत्र का संचालन मनीष वैद्य ने किया. आभार प्रदर्शन मंजू जैन जी ने किया. उम्मीद है, इन दो दिनों ने कविता को समझने, गढ़ने उसे मुकम्मल बनाने के जो बीज प्रतिभागियों के मन की माटी पर रोपें वे जल्द ही पल्लवित होंगे.

कविता

मैं अकेला यूँ ही गाता रहा

मैं अकेला यूँ ही गाता रहा
कुछ गीत-जुलुन गुनगुनाता रहा,
मैं अकेला टहलता रहा छत पर
चांद तारा और घटाएँ थीं नजर पर
वे श्रोता थे मेरे सुनसान झर पर,
जिन्हें अपनी कहानी
मैं सुनाता रहा.



राकेशधर द्विवेदी

मैं विरह के छंदों को गा रहा था
जिसे सुन कर नम में खड़ा कोई
जोर से ताली बजा रहा था....
दूर नभ में खड़ी थी मेरी प्रेयसी भी
जिसने सच्ची कहानी
मेरी पूरी सुनी,
वो चांद-तारों के
संग-संग गाती थी
जैसे काले मेघों के बीच
मुस्कुराती थी.

उसके होंठ थरथराए
और फिर बुदबुदाए,
रात भर तुम कहानी सुनाते रहे
वे चांद-तारे पीड़ा में
अश्रु लुटाते रहे.
जो पढ़ी नहीं गई कविता
वो बुनती रही,
ना कीमत पछी,
ना कीमत पीड़ा केनवास पर
लिखती रही.

40 के बाद वाला वैलेंटाइन..



सुचिता सकुनिका

अब रोज-रोज स्पेशल डेज नहीं मनाते, पर हर दिन में एक अपनापन होता है, नई उम्मीद, नई उमंग के साथ जिंदगी को जीने का सलीका होता है. कम होते बाल, और चौंकी सी होती लट्टें—वक्त की निशानी तो हैं, पर इन सबके बीच भी एक मुस्कान का ठहर जाना... शायद यही प्यार है. अब इजहार थोड़ा बदल जाता है... चुपचाप इंतजार में, बिना कहे थकान समझ जाने में, छोटी-छोटी बातों में ख्याल रख लेने में—यही तो अब प्यार नजर आता है. शायद... कुछ ऐसा ही होता है 40 के बाद वाला वैलेंटाइन—जहाँ प्यार कहां कम जाता है, पर हर रोज, हर पल और गहराई से महसूस किया जाता है.

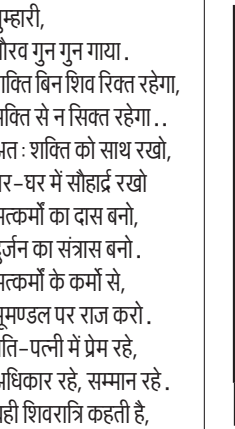
अब रोज-रोज स्पेशल डेज नहीं मनाते, पर हर दिन में एक अपनापन होता है, नई उम्मीद, नई उमंग के साथ जिंदगी को जीने का सलीका होता है. कम होते बाल, और चौंकी सी होती लट्टें—वक्त की निशानी तो हैं, पर इन सबके बीच भी एक मुस्कान का ठहर जाना... शायद यही प्यार है.

शिवरात्रि के पावन दिन पर, हर हर हर हर्षाया. गौरी प्यारी गौरी तुम्हारी, गौरव गुन गुन गया. शिव इमरू के डम डम डम, से ऊँकार मुस्कया. पार्वती शिव परिणय का, रात्रि महोत्सव आया. तुम सबके हो अन्तर्यामी, तुम सबसे हो ज्ञानी ध्यानी. पार्वती तुम्हारी महारानी, पर्वत की है हिम हिय रानी. सबसे प्यारी छवि उनकी है, सबसे न्यारी कृति उनकी है. तुम दोनों श्रमसाध्य सभी के, तुम दोनों सभाष सभी के. तुम रिश्तों में जान फूँकते, तुम से खब है राह पूछते. तुम सबके मस्तक पर रहते, हिय में बसते जिय को कसते. राम नाम तुमको अति प्यारा, दीन दुःखी सबसे है प्यारा. शिव रात्रि के पावन दिन, पर हर हर हर हर्षाया. गौरी प्यारी गौरी तुम्हारी, गौरव गुन गुन गया. गौरी को तुम मान हो देते,



प्रोफेसर (डॉ.) प्रज्ञा मिश्रा
म. गौ. वि. शा. विश्वविद्यालय
चित्रकूट (म.प्र.)

स्वामिनि का सम्मान हो देते. गौरी शक्ति तुम्हारी है, भोली भक्ति हमारी है. सारी अच्छाई तुममें है, कोरी सच्चाई तुममें है. कष्टों को तुम दूर भगाते, मेरा मन मजबूत बनाते. प्रेम प्रीति सबको सिखलाते, नारी जन आधार बताते. नारी को सम्मान दिलाते, यही पाठ सबको समझाते. शिवरात्रि के पावन दिन, पर हर हर हर हर्षाया. गौरी प्यारी गौरी तुम्हारी, गौरव गुन गुन गया.



अजय मिश्रा

होत प्रसन्न, प्रात अरु अक्षत परम उदार सदाशिव दानी, भयम बदल दे, लेख विधाता, विधि निज गति, बाधित जानी देख न सकत, हरत दीन दुख, आरतिहर, भोरे राम भगति, जन-मन भारत, उपजै, होय सकत भ्रम हानी, भ्रमितभारतजन, सुरति करो, हे आशुतोष, हे दिव्य ज्ञानी, देशद्रोही, मलेच्छमति से, सुरक्षा साधु, संत जन आन, हो त्रास समन, भारतभूमि, हे महाकाल, समर्थ भगवान

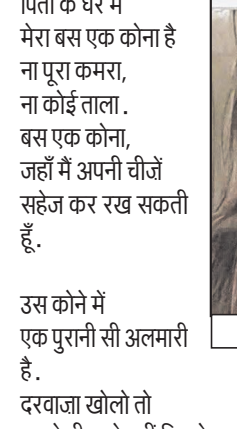
हे महाकाल समर्थ भगवान



राम भगति

भगवान औदरदानी, होत द्रवित, हरत विपति महिमा महान करुणा मय, उदार शिवशंकर, हे काशीपति, हे अविनाशी दीजे भगति, रामचरण रति, हे देवाधिदेव, विपुरासुर संहारी, राम भगति, जन-मन भारत, उपजै, होय सकत भ्रम हानी, भ्रमितभारतजन, सुरति करो, हे आशुतोष, हे दिव्य ज्ञानी, देशद्रोही, मलेच्छमति से, सुरक्षा साधु, संत जन आन, हो त्रास समन, भारतभूमि, हे महाकाल, समर्थ भगवान

मेरा कोना



नीना अंद्रोता

पिता के घर में मेरा बस एक कोना है ना पूरा कमरा, ना कोई ताला. बस एक कोना, जहाँ मैं अपनी चीजें सहेज कर रख सकती हूँ. उस कोने में एक पुरानी सी अलमारी है. दरवाजा खोलो तो कपड़े ठीक से नहीं मिलते सब कुछ जैसे जल्दी-जल्दी ढूँंस दिया गया हो. घर के कपड़े, त्योहारों के कपड़े, और कुछ ऐसे भी जो अब पहने नहीं जाते पर फेंके भी नहीं जाते. उसी अलमारी के ऊपर माँ का संसार रखा है. एक छोटा सा डिब्बा, दो-तीन कथियाँ, कुछ पिनें और वो सुखी

जो बरसों से खत्म नहीं होती. उसी के साथ दो तीन नई होती हैं मैं जानती हूँ माँ को ब्रांड का शौक नहीं. ना उसने कभी किसी दुकान का नाम लिया, ना कीमत पछी. कुछ कीमती लगता है तो सहेजकर रख लेती है मेरे हाथ अपने आप बढ़ जाते हैं. उसी डिब्बे की ओर कभी एक सुखी उठा लेती हूँ, कभी एक बिंदी. अजीब है ना... मैं खुद अपने लिए साज-श्रृंगार खरीदने में हमेशा नकारा रही हूँ. फिर भी... माँ के उस छोटे से डिब्बे में मुझे कोई लालच खींच लेता है. शायद... वो लालच नहीं है, बस माँ को अपने चेहरे पर थोड़ी देर के लिए उतार लेने की चाह है.